P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-12* August- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

झालावाड़ जिले में व्यापारिक कृषि का स्वरूप एवं नवीन प्रवृतियां– एक भौगोलिक अध्ययन

दीप चन्द बैरवा
शोधार्थी–भूगोल विभाग,
कोटा विश्वविद्यालय.,
कोटा,राजस्थान

हमीद अहमद
विभागाध्यक्ष–भूगोल,
राजकीय महाविद्यालय,
झालावाड,राजस्थान

रवीन्द्र मोदी
शोधार्थी–भूगोल विभाग,
कोटा विश्वविद्यालय.,
कोटा, राजस्थान

सारांश

झालावाड जिला कृषि विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहां पर खाद्यान्न फसलों के साथ–साथ व्यापारिक कृषि का भी विकास देखने को मिलता है तथा समय के साथ इस कृषि में कई नवीन प्रवृतियां उभरकर सामने आयी है जो कि जिले में इसके विकास से सीधी जुडी हुई है।

अतः झालावाड में इस व्यापारिक कृषि के परिदृश्य पर शोध पत्र द्वारा इसके स्वरूप, अवस्था व स्तर का विस्तृत विवेचन तथा इससे जुड़ी समस्याओं का अध्ययन करके इस दिशा में और अधिक प्रयास किये जा सकते है। इन तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोध पत्र का सृजन किया गया है।

मुख्य शब्द : कृषि, व्यापारिक, उत्पादन, सिंचाई, मिटटी, स्वरूप स्तर, विकास आदि।

प्रस्तावना

आदिकाल से ही मानव जीवन में कृषि का महत्व समझा जाता रहा है प्रारम्भिक काल से ही मानव ने अपने पेट की भूख शान्त करने के लिए कृषि कार्य को अपनाया है एवं अपने खाद्यान्नों की आवश्यकता की पूर्ति की है। कृषि का अर्थ व्यापक है, इसके अन्तर्गत मानव की उन समस्त क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है जिनकी सहायता से खाद्यान्न की प्राप्ति के लिए मिट्टी का उपयोग होता है। इसके अन्तर्गत भूमि की जुताई से लेकर कृत्रिम साधनों से सिंचाई, उर्वरकों की आपूर्ति, मिटटी सरंक्षण, हानिकारक तत्वों पौधों की रक्षा आदि अनेक विस्तृत कार्यक्रमों को अपनाया गया है। जिनका उद्देश्य मिट्टी की उत्पादकता में वृद्वि करना है। मानव विकास की प्राथमिक अवस्था में कृषि जीवन व्यापन का माध्यम थी लेकिन आज कृषि केवल खाद्यान्न का ही उत्पादन नही करती बल्कि मानव द्वारा अपने जीवन स्तर को उच्च स्तर का बनाने के लिये कई प्रकार की व्यापारिक फसलों का उत्पादन भी किया जा रहा है। मानव कृषि के द्वारा अपनी जीविका निर्वाह करने के साथ–साथ जब आय प्रदान करने वाली फसलों का भी उत्पादन करने लगता है तो कृषि का स्वरूप परिर्वतन होने लगता है और वह व्यापारिक कृषि के नाम से जानी जाती है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र व्यापारिक फसलों की कृषि की दृष्टि से जिले का प्रमुख स्थान है, प्रस्तुत शोध पत्र को निम्न साहित्यों का अध्ययन किया गया है। कृषि भूगोल माजिद हुसैन (2004) के अन्तर्गत कृषि स्वरूप एवं समय के अनुसार अपनाई गई नवीन तकनीकों का अध्ययन किया गया है। इसके अलावा जिला सांख्यिकी रूपरेखा (2009) तथा (2016) का भी शोध पत्र को पूर्ण करने में अध्ययन किया गया है। कृषि एवं फसल प्रतिरूप (2015) कृषि निदेशालय जयपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तक का भी अध्ययन किया गया है। कृषि विकास योजना (2016) कृषि विभाग जयपुर (राज.) का भी अध्ययन शामिल है प्रस्तुत शोध पत्र में यथा सम्भव सम्बन्धित साहित्य का गुणवत्ता से अध्ययन किया गया है तथा 2017 के बाद उपरोक्त विषय पर कोई शोध कार्य नही हुआ है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में झालावाड जिले में व्यापारिक कृषि एवं नवीन प्रवृत्तियों को प्रकट किया गया है। शोध पत्र को प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ो की सहायता से अन्वेषित किया गया है। इसमें प्राथमिक आंकडे यथायोग्य विधियां साक्षात्कार, प्रश्नावली, अनुसूची आदि के द्वारा एकत्रित किये गये हैं तथा द्वितीयक आंकडे अपेक्षित विभागो मे जाकर एकत्रित किये हैं प्राप्त आंकड़ों को उपयुक्त सांख्यिकी विधियों के द्वारा विश्लेषित एवं संश्लेषित किया गया है। इसके अलावा मानचित्र निर्माण उचित मापनी पर किया गया है साथ ही

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-12* August- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मुल्यांकन को अधिक स्पष्ट बनाने के लिए आरेख व तालिकाओं की सहायता से शोध पत्र को प्रमाणिकता प्रदान की गई है।

अध्ययन क्षेत्र

प्राकृतिक सोन्दर्य तथा खनिज सम्पदाओं से भरपूर विन्ध्याचल पर्वतमालाओं से अवेष्टित इस जिले का विस्तृत भू–भाग समुद्रतल से 950 फीट उंचाई पर स्थित है। यह जिला राजस्थान के दक्षिणी–पूर्वी छोर पर 23^0 45'20" से $24^0$52'17" उत्तरी अक्षांश एवं $75^0$27'35" से $76^0$56'48" पूर्वी देशान्तर तक मालवा पठार के उत्तरी भाग में स्थित है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 6219 वर्ग कि.मी. है। सन् 2011 की जनगणना प्रतिवेदन के आधार पर जिले की कुल जनसंख्या 14,11,129 है।

शोध उद्देश्य

कृषि की दृष्टि से झालावाड जिले का प्रमुख स्थान है जिले में कृषि विकास हेतु सरकारी गैर सरकारी प्रयासों द्वारा कृषकों की आय में वृद्वि एवं कृषि से सम्बन्धित मिट्टी व पानी की समस्याओं से सम्बन्धित समुचित प्रबन्धन के प्रयास किये जा रहे हैं। अतः इन तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुये प्रस्तुत शोध पत्र का सृजन किया गया है। इसकी पूर्ति के निमित निम्नलिखित उद्देश्यों को आधार बनाया गया है :–

1. झालावाड़ जिले की कृषि एवं उत्पादन का वर्तमान स्तर ज्ञात करना।
2. कृषि क्षेत्र का सामयिक, क्षेत्रीय, विश्लेषण एवं विवेचन करना।
3. कृषि पद्वति में होने वाले कालिक, स्थानिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना।

झालावाड़ जिले में व्यापारिक कृषि फसलों का वितरण क्षेत्रफल (हैक्ट.) में
2005–06 तथा 2014–15

क्र. स.	प्रमुख फसलें	क्षेत्रफल 2005–06	क्षेत्रफल 2014–15
1	सोयाबीन	205629	251582
2	सरसों	75974	80156
3	सन्तरा	6392	11148
4	लहसुन	1685	10242
5	धनियां	44390	106697
6	अफीम	299	14

सोयाबीन

जिले में बोई जाने वाली व्यापारिक फसलों में सोयाबीन का प्रमुख स्थान है यह जिले के अधिकांश किसानों के द्वारा की जाती है। वर्ष 2005–06 में कुल 205629 हैक्टेयर पर इसकी कृषि की गई जो 2014–15 में बढकर 251582 हैक्टेयर हो गई। इसकी फसल में बढोतरी देखने को मिलती है इसका मुख्य कारण जिले में सोयाबीन की अनुकूलतम दशाओं का पाया जाना है।

सरसों

जिले के अधिकांश किसानो के द्वारा शीत ऋतु के आगमन पर बोई जाने वाली फसलों में सरसों का मुख्य स्थान है। सन 2005–06 में 75974 हैक्टेयर पर इसकी कृषि की गई जो 2014–15 में बढकर 80156 हैक्टेयर हो गई।

संतरा

जिले में संतरे की बागवानी की गति में तीव्र गति से विकास हो रहा है। सन 2005–06 में यह 6392 हैक्टेयर पर इसकी बागवानी की गई जो 2014–15 में बढकर 11188 हैक्टेयर हो गई। संतरे की बागवानी एवं उत्पादन में जिले का नाम राज्य में ही नही अपितु देश में भी है।

लहसुन

लहसुन उत्पादन की और जिले के किसान इसकी कृषि करने के लिये अधिक अग्रसर हुए हैं इसक प्रमुख कारण प्रति हैक्टेयर अधिक उपज एवं अच्छी कीमतों का होना है। सन 2005–06 में कुल 1685 हैक्टेयर पर उसकी कृषि की गई जो 2014–15 में बढकर 10242 हैक्टेयर हो गई।

धनियां

जिले में सन 2005–06 में 44390 हैक्टेयर पर इसकी कृषि की गई जो 2014–15 में बढकर 106697 हैक्टेयर हो गई। जिले के अधिकांश किसानों के द्वारा धनिये की कृषि की जाती है।

अफीम

अफीम की कृषि मुख्य रूप से सरकार द्वारा जारी पट्टे एवं अनुमति के फलस्वरूप किसानों के द्वारा की जाती है। 2005–06 में यहां कुल 299 हैक्टेयर पर

इसकी कृषि की गई जो 2014–15 में घटकर 14 हैक्टेयर रह गई जिसका प्रमुख कारण सरकार द्वारा किसानों को कम संख्या में पट्टे जारी करना है।

व्यापारिक कृषि परिदृश्य

जिले में कृषि उत्पादक क्षेत्रों के साथ–साथ इसके उत्पादन मे भी वृद्वि हुई है इसमें प्रमुख रूप से लाभ देने वाली सुविधाओं में सिंचाई की सुविधायें होना, उन्नत किस्म के पौधों का उपलब्ध होना, समय पर कीटनाशक दवाईयों का प्रयोग एवं जिला एवं राज्य प्रशासन द्वारा कृषि उत्पादक क्षेत्रों एवं कृषकों को उत्पादन में वृद्वि करने एवं उन्हे कृषि करने को प्रेरित करना प्रमुख है। जिले में कृषि उत्पादन में वृद्वि के साथ–साथ यहां के कृषि परिदृश्य में भी बदलाव आया है। यहां व्यापारिक फसल उत्पादन करने वालें क्षेत्रो में पहले कृषकों द्वारा केवल खाद्यान्नों प्रदार्थो का उत्पादन किया जाता था, किन्तु अब खाद्यान्न उत्पादन के साथ–साथ प्रमुख व्यापारिक मुद्रा दायिनी फसलों की कृषि भी प्रमुखता से की जा रही है। पिछले कुछ वर्षो के अध्ययन से पाया कि जिले में व्यापारिक कृषि परिदृश्य में परिवर्तन हो रहा है। एवं इसकी कृषि की और किसानो का ध्यान आकर्षित हुआ है इसका प्रमुख कारण किसानों के द्वारा अपनी कृषि कार्य में नवीन तकनीकों का प्रयोग करना प्रमुख है एवं भविष्य में इसके और अधिक विकास की सम्भावनायें जिले में मौजूद हैं।

निष्कर्ष

व्यापारिक कृषि फसलों के विकास की दृष्टि से एवं आय के प्रमुख स्त्रोतों में कृषि उत्पादन का प्रमुख स्थान है अतः कृषि यहाँ पर महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं। आगामी दशकों में जिले में कृषि क्षेत्र में व्यापारिक फसलों के उत्पादन व उत्पादकता में वृद्धि की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती हैं। कृषि मानव विकास का सूचक हैं, इसके साथ हीं जीवन स्तर में वृद्धि, आय में वृद्वि आदि पक्ष में कृषि के साथ सीधे जुड़े हुए है। इस प्रकार निष्कर्ष स्वरुप कहाँ जा सकता है कि जिले में व्यापारिक कृषि फसलों के आगे ओर अधिक विकास की सम्भावनायें यहाँ मौजुद हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कृषक मार्गदर्शिका, कृषि सूचना एवं कृषि विभाग, राजस्थान जयपुर 2015*
2. *सक्सेना एच.एम. राजस्थान का भूगोल 2018*
3. *हुसैन माजिद, कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन जयपुर – 2004*
4. *सांख्यिकी रूपरेखा निदेशालय सांख्यिकी विभाग राजस्थान जयपुर 2009 तथा 2016*
5. *कृषि विकास योजना, कृषि विभाग जयपुर राजस्थान 2016*
6. *कृषि एवं फसल प्रतिरूप, कृषि निदेशालय जयपुर 2015.*